मिश्र गुणस्थान

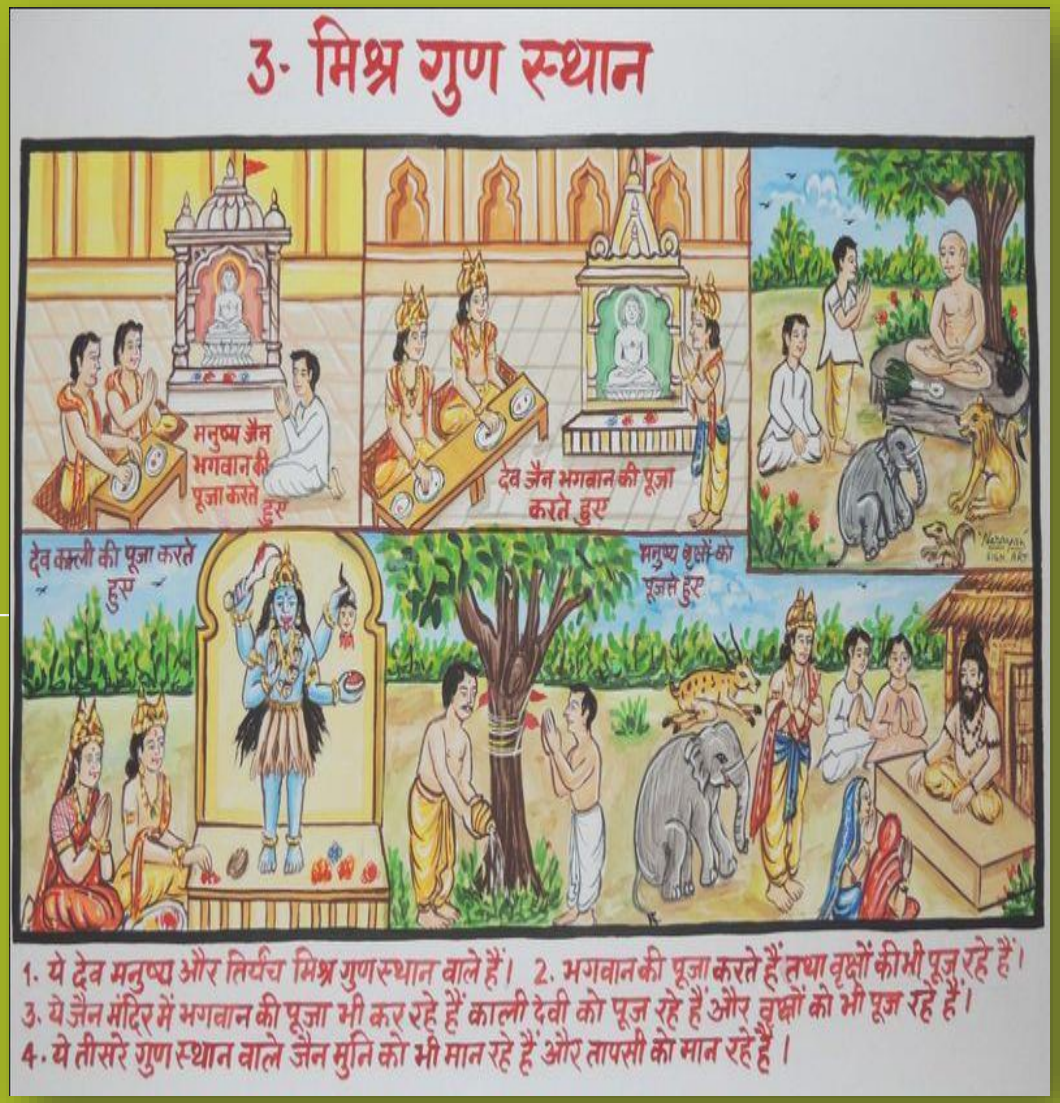
3- मिश्र गुण स्थान
मनुष्य जैन भगवान की पूजा करते हुए
देव जैन भगवान की पूजा करते हुए
देव काली की पूजा करते हुए
मनुष्य वृक्षों को पूजते हुए
1. ये देव मनुष्य और तिर्यंच मिश्र गुणस्थान वाले हैं। 2. भगवान की पूजा करते हैं तथा वृक्षों की भी पूज रहे हैं।
3. ये जैन मंदिर में भगवान की पूजा भी कर रहे हैं काली देवी को पूज रहे हैं और वृक्षों को भी पूज रहे हैं।
4. ये तीसरे गुण स्थान वाले जैन मुनि को भी मान रहे हैं और तापसी को मान रहे हैं।

गाथा 1 : मंगलाचरण

सिद्धं सुद्धं पणमिय जिणिंदवरणेमिचंदमकलंकं।

गुणरयणभूसणुदयं जीवस्स परूवणं वोच्छं॥

1. जो सिद्ध, शुद्ध एवं अकलंक हैं एवं
2. जिनके सदा गुणरूपी रत्नों के भूषणों का उदय रहता है,
3. ऐसे श्री जिनेन्द्रवर नेमिचंद्र स्वामी को नमस्कार करके
4. जीव की प्ररूपणा को कहूंगा ।

सम्मामिच्छुदयेण य, जत्तंतरसव्वघादिकज्जेण।
ण य सम्मं मिच्छं पि य, सम्मिस्सो होदि परिणामो ॥21 ॥

अर्थ - जिसका प्रतिपक्षी आत्मा के गुण को सर्वथा घातने का कार्य दूसरी सर्वघाति प्रकृतियों से विलक्षण जाति का है उस जात्यन्तर सर्वघाति सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृति के उदय से केवल सम्यक्त्वरूप या मिथ्यात्वरूप परिणाम न होकर जो मिश्ररूप परिणाम होता है, उसको मिश्र गुणस्थान कहते हैं ॥21 ॥

दहिगुडमिव वा मिस्सं, पुहभावं णेव कारिदुं सक्कं।
एवं मिस्सयभावो, सम्मामिच्छो त्ति णादव्वो ॥22 ॥

अर्थ - जिस प्रकार दही और गुड़ को परस्पर इस तरह से मिलाने पर कि फिर उन दोनों को पृथक्-पृथक् नहीं कर सकें, उस मिश्रित द्रव्य का रस मिश्ररूप (खट्टा और मीठा मिला हुआ) होता है। उसी प्रकार मिश्रपरिणामों में भी एक ही काल में सम्यक्त्व और मिथ्यात्वरूप परिणाम रहते हैं, ऐसा समझना चाहिये ॥22 ॥

मिश्र गुणस्थान

निमित्त

- सम्यग्मिथ्यात्व कर्म का उदय
- जात्यंतर सर्वघाति प्रकृति

परिणाम

- मिश्र
- सम्यक् भी, मिथ्या भी

उदाहरण

- गुड़-मिश्रित दही का स्वाद
- न सिर्फ खट्टा, न सिर्फ मीठा, इसीलिए खट्टा मीठा

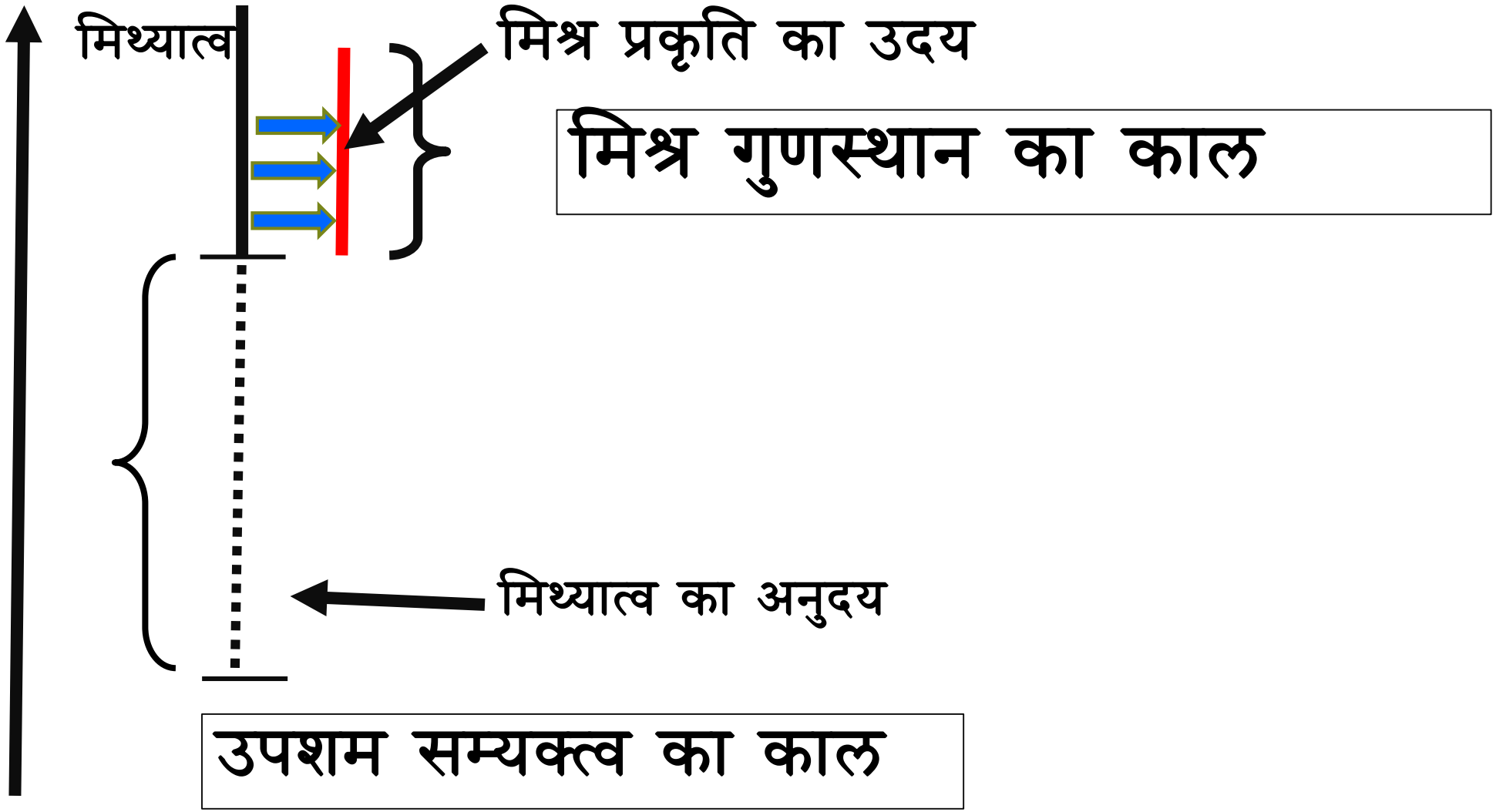
मिथ्यात्व
मिश्र प्रकृति का उदय
मिश्र गुणस्थान का काल
मिथ्यात्व का अनुदय
उपशम सम्यक्त्व का काल
कर्म स्थिति

सो संजमं ण गिण्हदि, देसजमं वा ण बंधदे आउं।
सम्मं वा मिच्छं वा, पडिवज्जिय मरदि णियमेण ॥23 ॥

अर्थ - तृतीय गुणस्थानवर्ती जीव सकल संयम या देशसंयम को ग्रहण नहीं करता और न इस गुणस्थान में आयुकर्म का बंध ही होता है तथा इस गुणस्थान वाला जीव यदि मरण करता है तो नियम से सम्यक्त्व या मिथ्यात्वरूप परिणामों को प्राप्त करके ही मरण करता है ॥23 ॥

मिश्र गुणस्थान - नियम

सकल-संयम अथवा देश-संयम को ग्रहण नहीं करता

आयु नहीं बांधता है

इस गुणस्थान में मरण नहीं होता है

यहाँ मारणान्तिक समुद्धात नहीं होता है

सम्मत्त-मिच्छपरिणामेसु जहिं आउगं पुरा बद्धं।
तहिं मरणं मरणंतसमुग्घादो वि य ण मिस्सम्मि ॥24 ॥

अर्थ - तृतीय गुणस्थानवर्ती जीव ने तृतीय गुणस्थान को प्राप्त करने से पहले सम्यक्त्व या मिथ्यात्वरूप परिणामों में से जिस जाति के परिणाम काल में आयुकर्म का बंध किया हो उस ही तरह के परिणामों के होने पर उसका मरण होता है, किन्तु मिश्र गुणस्थान में मरण नहीं होता और न इस गुणस्थान में मारणान्तिक समुद्धात ही होता है ॥24 ॥

सम्यक्त्व के प्रकार

- क्षायोपशमिक
  - दर्शन मोहनीय कर्म का क्षयोपशम
- औपशमिक
  - उपशम
- क्षायिक
  - क्षय

सम्मत्तदेसघादिस्सुदयादो वेदगं हवे सम्मं।
चलमलिनमगाढं तं, णिच्चं कम्मक्खवणहेदु ॥25 ॥

अर्थ - देशघाति सम्यक्त्व प्रकृति के उदय होने पर जो आत्मा के परिणाम होते हैं उनको वेदक या क्षायोपशमिक सम्यग्दर्शन कहते हैं।

वे परिणाम चल, मलिन या अगाढ़ होते हुए भी नित्य ही अर्थात् जघन्य अन्तर्मुहूर्त से लेकर उत्कृष्ट 66 सागर पर्यन्त कर्मों की निर्जरा के कारण हैं ॥25 ॥

क्षयोपशम किसे कहते हैं?

क्षय

- वर्तमानकालीन सर्वघाति स्पर्धकों का उदयाभावी क्षय

उपशम

- भविष्य में उदय में आने योग्य सर्वघाति स्पर्धकों का सदवस्थारूप उपशम

उदय

- वर्तमानकालीन देशघाती स्पर्धकों का उदय

इन 3 रूप कर्म की अवस्था को क्षयोपशम कहते हैं |

उदयाभावी क्षय

सर्वघाती प्रकृतियों का अनंत गुणा हीन होकर देशघाती में परिवर्तित होकर उदय में आने को उदयाभावी क्षय कहते हैं |

इसमें सर्वघाति स्पर्धक उदय में आने के एक समय पूर्व देशघाती में परिवर्तित होते हैं |

उदयाभावी क्षय

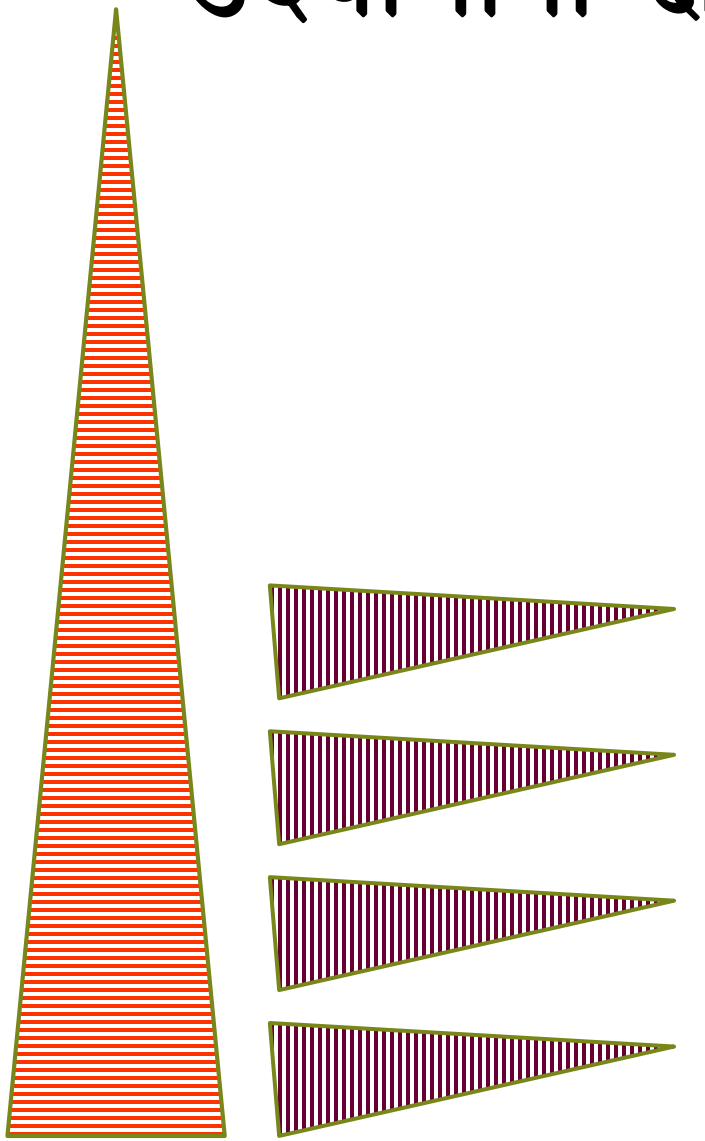

अनुभाग भेद

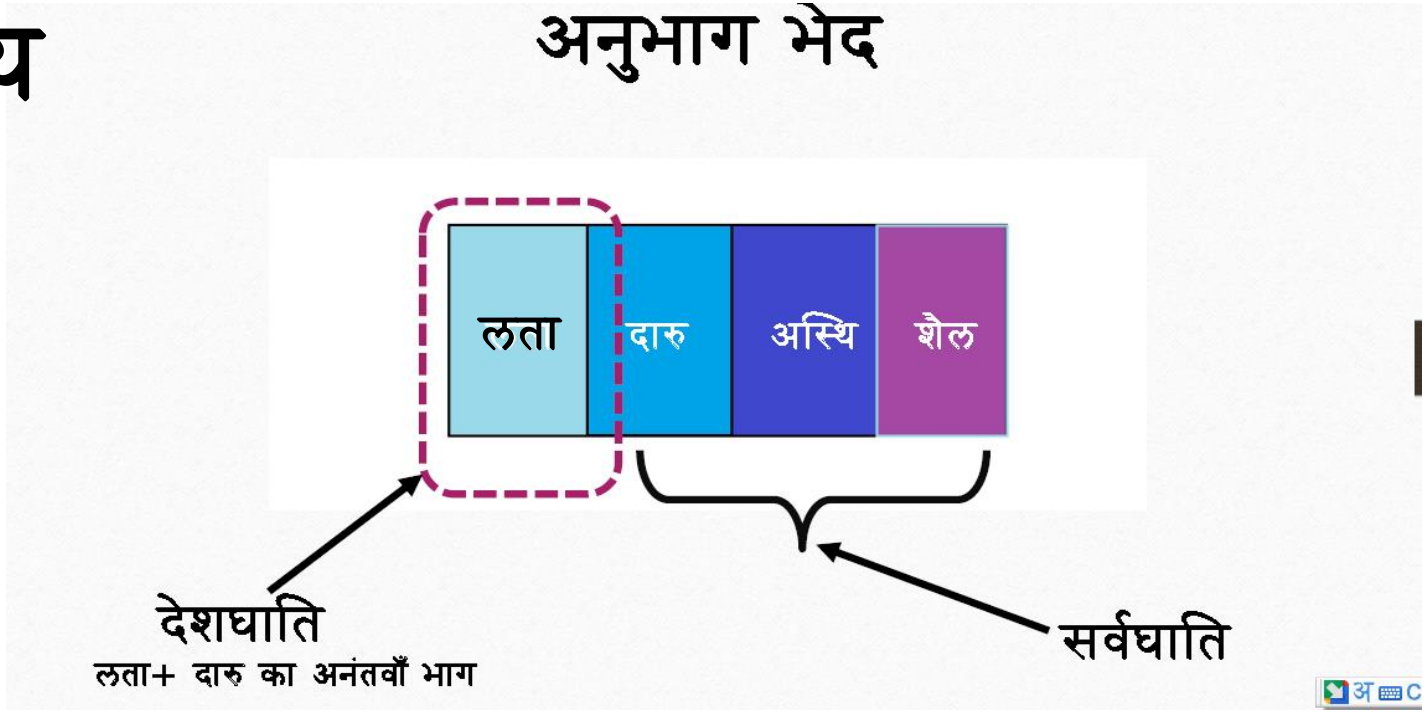

अनुभाग का अनंत गुणा हीन होना
सर्वघाति का देशघाति रूप उदय होना

सदवस्थारूप उपशम

वर्तमान समय को छोड़कर भविष्य में उदय में आने वाले कर्मों के सत्ता में रहने को सदवस्थारूप उपशम कहते हैं ।

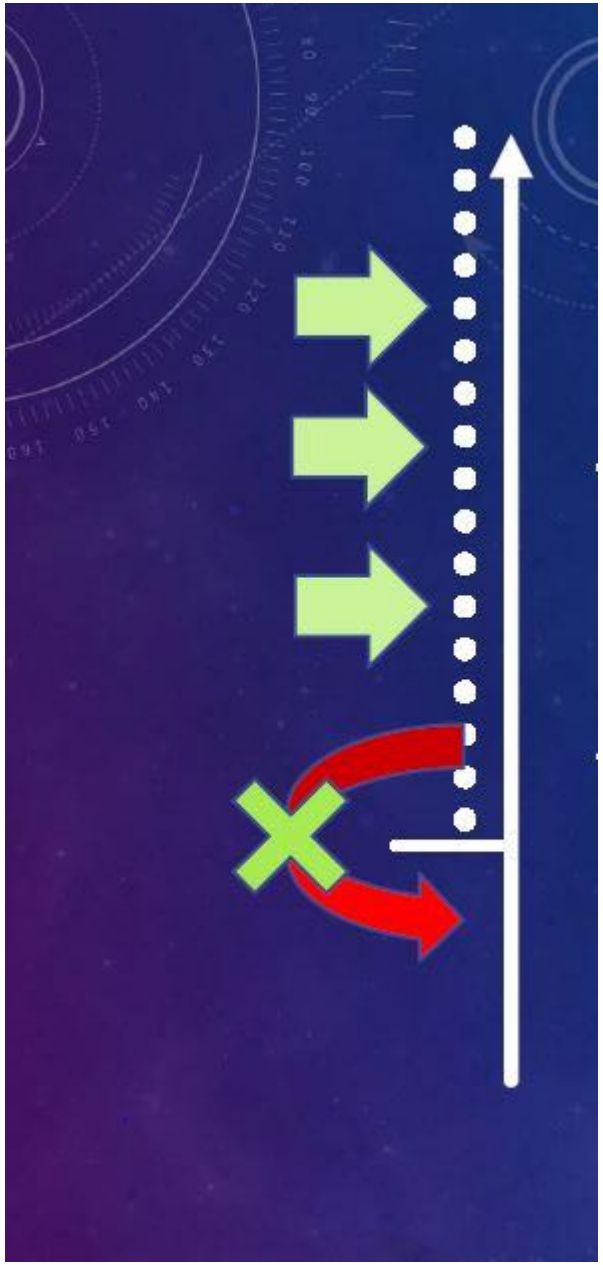

कर्म स्थिति

उदीरणा न होना

क्षायोपशमिक सम्यक्त्व कैसे ?

मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी ४ का

उदयाभावी क्षय

सदवस्थारूप उपशम

तत्त्वार्थ श्रद्धान

सम्यक्त्व प्रकृति का

उदय

चल मलादि दोष

क्षयोपशम सम्यक्त्व में दोष

चल

जल की तरंगों की तरह चंचल

आप्त, आगम, पदार्थों के विषय में चंचलपना

मल

बाह्य मल से सहित शुद्ध सोना

शंकादि मल सहित सम्यक्त्व

अगाढ़

वृद्ध के हाथ की लाठी

आप्तादि की प्रतीति में शिथिलता

सत्तण्हं उवसमदो, उवसमसम्मो खयादु खइयो य।
विदियकसायुदयादो, असंजदो होदि सम्मो य ॥26 ॥

अर्थ - दर्शनमोहनीय की तीन अर्थात् मिथ्यात्व, मिश्र और सम्यक्त्व प्रकृति तथा चार अनंतानुबंधी कषाय - इन सात प्रकृतियों के उपशम से औपशमिक और सर्वथा क्षय से क्षायिक सम्यग्दर्शन होता है।

इस चतुर्थगुणस्थानवर्ती सम्यग्दर्शन के साथ संयम बिलकुल नहीं होता क्योंकि यहाँ पर दूसरी अप्रत्याख्यानावरण कषाय का उदय रहा करता है। इसी से इस गुणस्थानवर्ती जीव को असंयत सम्यग्दृष्टि कहते हैं ॥26 ॥

औपशमिक सम्यक्त्व

दर्शन मोहनीय की 1 या 2 या 3 प्रकृतियों का प्रशस्त उपशम करने पर तथा

अनन्तानुबन्धी की 4 प्रकृतियों का अप्रशस्त उपशम होने पर

होने वाले जीव के सम्यक्त्व परिणाम को औपशमिक सम्यक्त्व कहते हैं ।

उपशम किसे कहते हैं?

1. कर्मों का अपने परिणामों के निमित्त से आगे-पीछे करना वह उपशम (प्रशस्त उपशम) कहलाता है |

2. उससे जो gap/empty space बनेगा तब उस gap / empty space में उस-उस कर्म प्रकृति का उदय नहीं रहेगा |

अनादि मिथ्यादृष्टि के चतुर्थ गुणस्थान में जाने की प्रक्रिया

४ लब्धि प्राप्त कर

५ वी लब्धि के ३ करण परिणाम कर

उपशम सम्यक्त्व प्राप्त करे

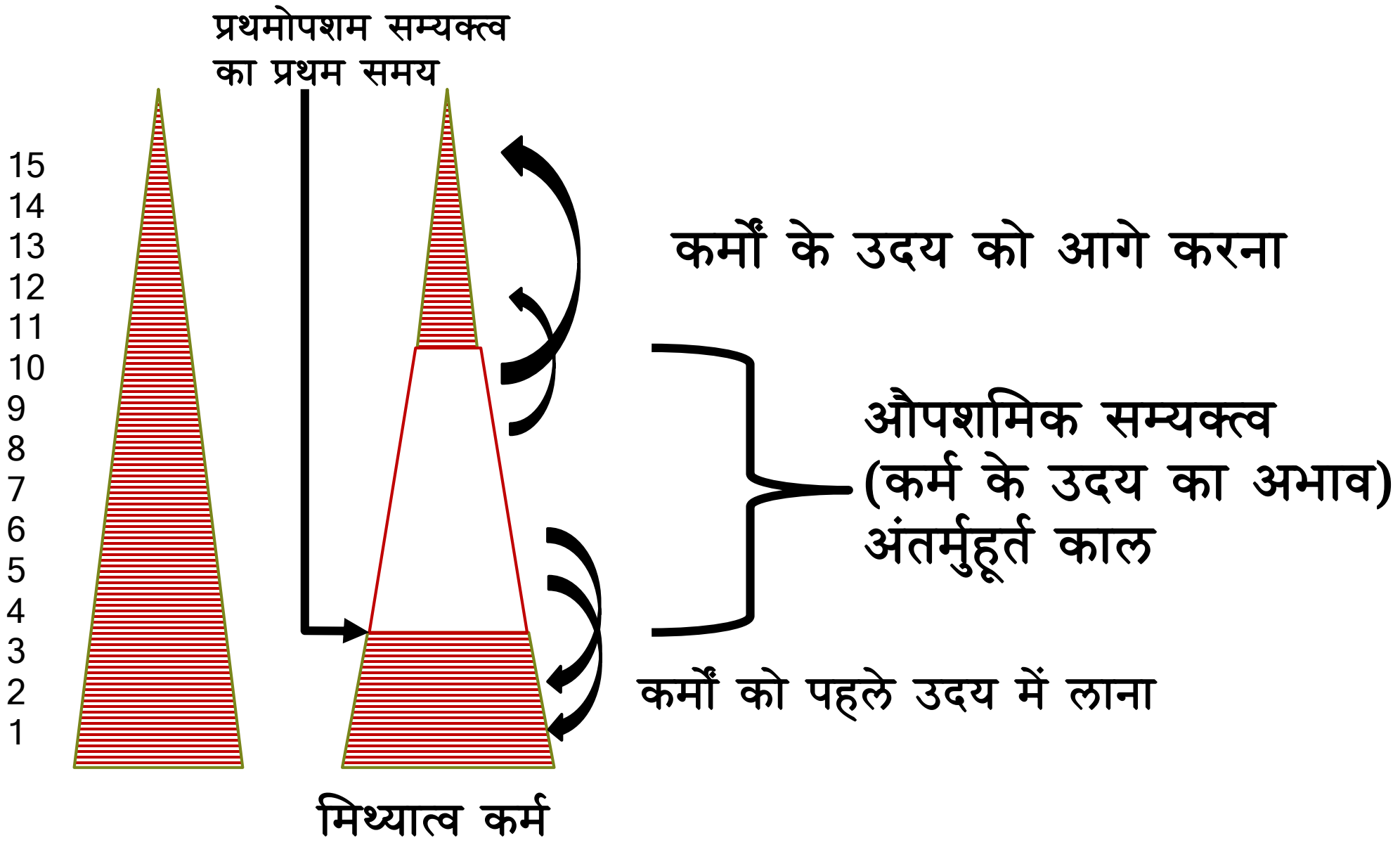
प्रथमोपशम सम्यक्त्व
का प्रथम समय
15
14
13
12
11
10
9
8
7
6
5
4
3
2
1
कर्मों के उदय को आगे करना
औपशमिक सम्यक्त्व
(कर्म के उदय का अभाव)
अंतर्मुहूर्त काल
कर्मों को पहले उदय में लाना
मिथ्यात्व कर्म

औपशमिक सम्यक्त्व से जाने के 4 मार्ग

क्षायिक सम्यक्त्व

अनन्तानुबन्धी की 4 प्रकृतियों की विसंयोजना करके

दर्शन मोहनीय की 3 प्रकृतियों का क्षय करने पर

होने वाले जीव के सम्यक्त्व परिणाम को क्षायिक सम्यक्त्व कहते हैं

अविरत सम्यक्त्व

परिणाम

- अविरत रूप
- सम्यक्त्व रूप

निमित्त

- अप्रत्याख्यानावरण कषाय का उदय
- दर्शन मोहनीय का उपशम, क्षय या क्षयोपशम

सम्माइट्ठी जीवो, उवइट्ठं पवयणं तु सद्दहदि।
सद्दहदि असब्भावं, अजाणमाणो गुरुणियोगा ॥27 ॥

अर्थ - जो जीव अर्हन्तादिकों द्वारा उपदेशित ऐसा जो प्रवचन अर्थात् आप्त, आगम, पदार्थ ये तीन, उन्हें श्रद्धता है, उनमें रुचि करता है, उन आप्तादिकों में असद्भावं अर्थात् अतत्त्व अन्यथारूप, उसको भी अपने विशेष ज्ञान के अभाव से केवल गुरु ही के नियोग से जो इस गुरु ने कहा, सो ही अर्हन्त की आज्ञा है, इसप्रकार प्रतीति से श्रद्धान करता है, वह भी सम्यग्दृष्टि ही है, क्योंकि अर्हन्त की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करता है ॥27 ॥

सुत्तादो तं सम्मं, दरसिज्जंतं जदा ण सद्दहदि।
सो चेव हवइ मिच्छाइट्ठी जीवो तदो पहुदी ॥28 ॥

अर्थ - उस प्रकार असत्य अर्थ का श्रद्धान करनेवाला आज्ञा सम्यग्दृष्टि जीव, जिस काल प्रवीण अन्य आचार्यों द्वारा, पूर्व में ग्रहण किया हुआ असत्यार्थरूप श्रद्धान से विपरीत भाव सत्यार्थ, सो गणधरादिकों के सूत्र दिखाकर सम्यक् प्रकार से निरूपण किया जाए, उसका खोटे हठ से श्रद्धान न करे तो, उस काल से लेकर, वह जीव मिथ्यादृष्टि होता है। क्योंकि सूत्र के अश्रद्धान से जिन आज्ञा के उल्लंघन का सुप्रसिद्धपना है, उस कारण से मिथ्यादृष्टि होता है ॥28 ॥

णो इंदियेसु विरदो, णो जीवे थावरे तसे वापि।
जो सद्दहदि जिणुत्तं, सम्माइट्ठी अविरदो सो ॥29 ॥

अर्थ - जो इन्द्रियों के विषयों से तथा त्रस स्थावर जीवों की हिंसा से विरत नहीं है, किन्तु जिनेन्द्रदेव द्वारा कथित प्रवचन का श्रद्धान करता है वह अविरतसम्यग्दृष्टि है ॥29 ॥

अविरत सम्यक्त्व

अविरत

विरत नहीं है

- 6 काय के जीवों की हिंसा से
- 5 इन्द्रिय और मन के विषयों में प्रवृत्ति से

सम्यक्त्व

जिनेन्द्र देव के वचनों में श्रद्धान है

पच्चक्खाणुदयादो, संजमभावो ण होदि णवरिं तु।
थोववदो होदि तदो, देसवदो होदि पंचमओ ॥30 ॥

अर्थ - यहाँ पर प्रत्याख्यानावरण कषाय का उदय रहने से पूर्ण संयम तो नहीं होता, किन्तु यहाँ इतनी विशेषता होती है कि अप्रत्याख्यानावरण कषाय का उदय न रहने से एकदेश व्रत होते हैं। अतएव इस गुणस्थान का नाम देशव्रत या देशसंयम है। यही पंचम गुणस्थान कहलाता है ॥30 ॥

देशविरत गुणस्थान

परिणाम

- देशविरत (अणुव्रत पालन-रूप)
- पूर्ण संयम का अभाव

निमित्त

- दो कषाय चौकड़ी का अनुदय
- प्रत्याख्यानावरण कषाय का उदय

क्षायोपशमिक भाव कैसे ?

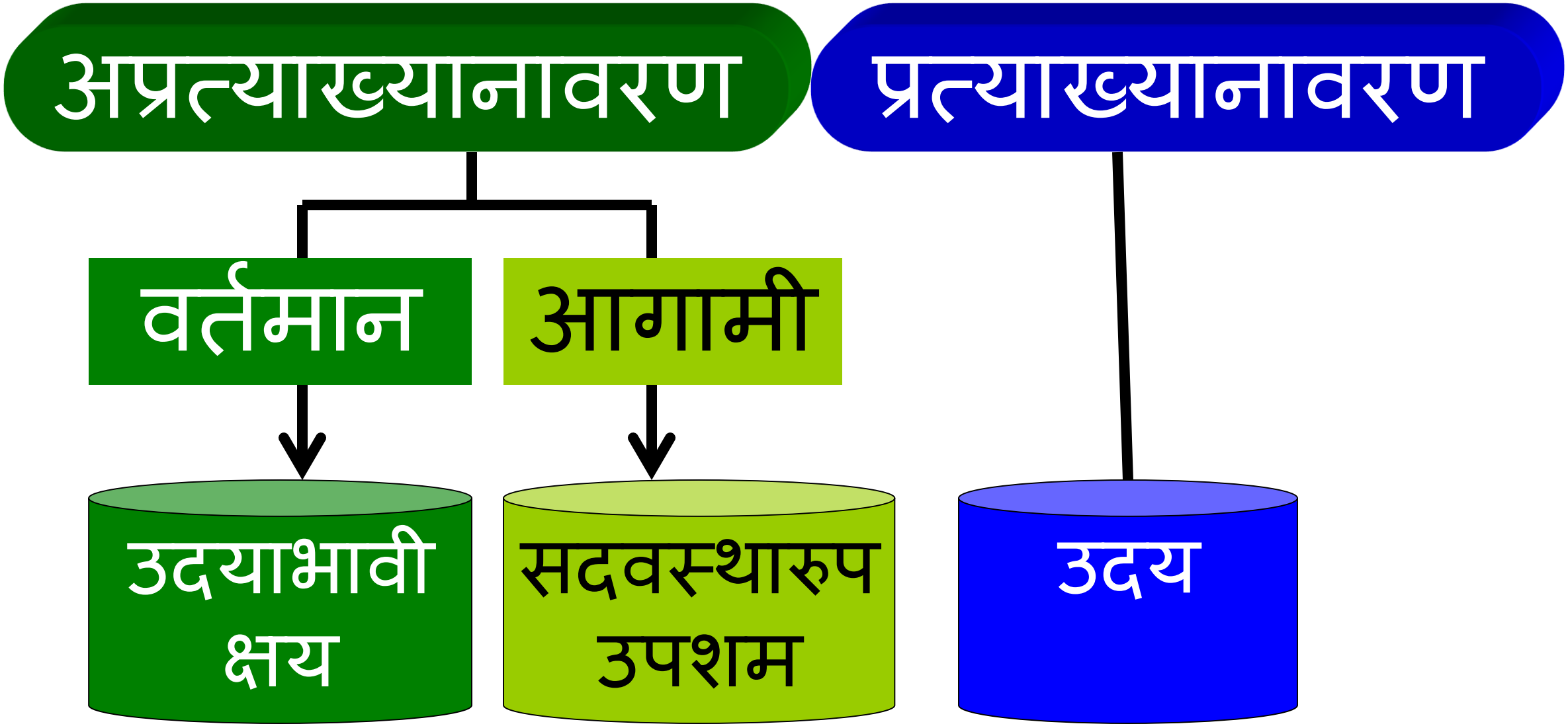

11 प्रतिमा - नाम

1. दर्शन प्रतिमा
2. व्रत प्रतिमा
3. सामायिक
4. प्रोषधोपवास
5. सचित्त त्याग
6. दिवामैथुन त्याग या रात्री भुक्ति त्याग
7. ब्रह्मचर्य
8. आरंभ त्याग
9. परिग्रह त्याग
10. अनुमति त्याग
11. उद्दिष्ट त्याग

जो तसवहाउ विरदो, अविरदओ तह य थावरवहादो।
एक्कसमयम्हि जीवो, विरदाविरदो जिणेक्कमई ॥31 ॥

अर्थ - जो जीव जिनेन्द्रदेव में अद्वितीय श्रद्धा को रखता हुआ त्रस की हिंसा से विरत और उस ही समय में स्थावर की हिंसा से अविरत होता है, उस जीव को विरताविरत कहते हैं ॥31 ॥

एक काल में विरताविरत

- विरत
  - त्रस हिंसा का त्यागी
- अविरत
  - स्थावर हिंसा का अत्यागी

अन्य नाम

विरताविरत

संयमासंयम

देशसंयम

देशचारित्र

संजलणणोकसायाणुदयादो संजमो हवे जम्हा।
मलजणणपमादो वि य, तम्हा हु पमत्तविरदो सो ॥32 ॥

अर्थ - सकल संयम को रोकनेवाली प्रत्याख्यानावरण कषाय का क्षयोपशम होने से पूर्ण संयम तो हो चुका है, किन्तु उस संयम के साथ-साथ संज्वलन और नोकषाय का उदय रहने से संयम में मल को उत्पन्न करने वाला प्रमाद भी होता है। अतएव इस गुणस्थान को प्रमत्तविरत कहते हैं ॥32 ॥

प्रमत्त विरत

परिणाम

- पूर्ण संयम भाव
- प्रमाद की उत्पत्ति

निमित्त

- तीन कषाय चौकड़ी का अनुदय
- संज्वलन और नोकषाय का तीव्र उदय

वत्तावत्तपमादे, जो वसइ पमत्तसंजदो होदि।
सयलगुणसीलकलिओ, महव्वई चित्तलायरणो ॥33 ॥

अर्थ - जो महाव्रती सम्पूर्ण (28) मूलगुण और शील के भेदों से युक्त होता हुआ भी व्यक्त एवं अव्यक्त दोनों प्रकार के प्रमादों को करता है वह प्रमत्तसंयत गुणस्थानवाला है। अतएव वह चित्रल आचरणवाला माना गया है ॥33 ॥

प्रमाद क्या?

अच्छे कार्यों के करने में आदर भाव का न होना यह प्रमाद है ।

विकहा तहा कसाया, इंदिय णिद्दा तहेव पणयो य।
चदु चदु पणमेगेगं, होंति पमादा हु पण्णरस ॥34 ॥

अर्थ - चार विकथा - स्त्रीकथा, भक्तकथा, राष्ट्रकथा, अवनिपालकथा, चार कषाय - क्रोध, मान, माया, लोभ, पंच इन्द्रिय - स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु, श्रोत्र, एक निद्रा और एक प्रणय-स्नेह इस तरह कुल मिलाकर प्रमादों के पन्द्रह भेद हैं ॥34 ॥

15 प्रमाद

- 4 विकथा
  - स्त्री
  - भोजन
  - राष्ट्र
  - चोर
- 4 कषाय
  - क्रोध
  - मान
  - माया
  - लोभ
- 5 इन्द्रिय
  - स्पर्शन
  - रसना
  - घ्राण
  - चक्षु
  - कर्ण
- निद्रा
- स्नेह

विकथा

- संयम विरुद्ध कथा को विकथा कहते हैं ।

कषाय

- संयम गुण को घाते, उसे कषाय कहते हैं ।

इंद्रिय

- संयम विरोधी इंद्रियों की विषय प्रवृत्ति को इन्द्रिय कहते हैं ।

निद्रा

- स्त्यानगृद्धि आदिक 3 अथवा निद्रा, प्रचला के तीव्र उदय से पदार्थों का सामान्यमात्र ग्रहण को रोकने वाली जड़रूप अवस्था निद्रा है ।

प्रणय

- बाह्य पदार्थों में ममत्वरूप भाव स्नेह है ।

संखा तह पत्थारो, परियट्टण णट्ठ तह समुद्दिट्ठं।
एदे पंच पयारा, पमदसमुक्कित्तणे णेया ॥35 ॥

अर्थ - प्रमाद के विशेष वर्णन के विषय में इन पाँच प्रकारों को समझना चाहिये। संख्या, प्रस्तार, परिवर्तन, नष्ट और समुद्दिष्ट । आलापों के भेदों की गणना को संख्या, संख्या के रखने या निकालने के क्रम को प्रस्तार, एक भेद से दूसरे भेद पर पहुँचने के क्रम को परिवर्तन, संख्या के द्वारा भेद के निकालने को नष्ट और भेद को रखकर संख्या निकालने को समुद्दिष्ट कहते हैं ॥35 ॥

प्रमाद को समझने के उपाय

संख्या	• आलाप के भेदों की गणना
प्रस्तार	• संख्या के रखने या निकालने के क्रम को प्रस्तार कहते हैं।
परिवर्तन	• एक भेद से दूसरे भेद पर पहुँचने को परिवर्तन कहते हैं।
नष्ट	• संख्या के द्वारा भेद निकालने को नष्ट कहते हैं।
समुद्दिष्ट	• भेद के द्वारा संख्या निकालने को समुद्दिष्ट कहते हैं ।

सव्वे पि पुव्वभंगा, उवरिमभंगेसु एक्कमेक्केसु।
मेलंति त्ति य कमसो, गुणिदे उप्पज्जदे संखा ॥36 ॥

अर्थ - पूर्व के सब ही भंग आगे के प्रत्येक भंग में मिलते हैं, इसलिये क्रम से गुणा करने पर संख्या उत्पन्न होती है ॥36॥

संख्या (भंग का जोड़ कैसे लायें)

1. सर्व प्रमाद-पिण्ड को रखकर आपस में गुणा करने पर संख्या प्राप्त होती है |

विकथा		कषाय		इन्द्रिय		निद्रा		स्नेह
4	×	4	×	5	×	1	×	1

2. सर्व प्रमादों की संख्या = 80

पढमं पमदपमाणं, कमेण णिक्खविय उवरिमाणं च।
पिंडं पडि एक्केकं, णिक्खित्ते होदि पत्थारो ॥37 ॥

अर्थ - प्रथम प्रमाद के प्रमाण का विरलन कर क्रम से निक्षेपण करके उसके एक-एक रूप के प्रति आगे के पिण्डरूप प्रमाद के प्रमाण का निक्षेपण करने पर प्रस्तार होता हैं ॥37 ॥

संख्या को निकालने/समझने की विधि दो प्रकार है ।
इसे प्रथम प्रस्तार व द्वितीय प्रस्तार कहते हैं ।

प्रथम प्रस्तार

Step 1: प्रथम प्रमाद पिण्ड का विरलन करो ।

विकथा (4)	1 स्त्री	1 भक्त	1 राज	1 अवनि

Step 2: इस विरलन पर द्वितीय प्रमाद पिण्ड रखो ।

कषाय (4)	4	4	4	4
विकथा (4)	1 स्त्री	1 भक्त	1 राज	1 अवनि

ये जो 16 आए, अब इसे प्रथम प्रमाद पिण्ड समझना । आगे का प्रमाद पिण्ड दूसरा कहलायेगा ।

1. Step 3: इस प्राप्त प्रथम पिण्ड का विरलन करो ।

1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1
क्रो	मा	मा	लो	क्रो	मा	मा	लो	क्रो	मा	मा	लो	क्रो	मा	मा	लो
स्त्री	स्त्री	स्त्री	स्त्री	भ	भ	भ	भ	रा	रा	रा	रा	अ	अ	अ	अ
कषाय-विकथा (16)															

Step 4: इसके ऊपर अगले पिण्ड (5 इन्द्रिय) का विरलन करो ।

5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5
1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1
क्रो	मा	मा	लो	क्रो	मा	मा	लो	क्रो	मा	मा	लो	क्रो	मा	मा	लो
स्त्री	स्त्री	स्त्री	स्त्री	भ	भ	भ	भ	रा	रा	रा	रा	अ	अ	अ	अ

इसका जोड़ = 80 । आगे निद्रा व प्रणय 1-1 ही हैं| उन्हें उपर्युक्त विधि से रखने पर भी भंग 80 ही होते हैं ।

इन 80 भंगों को कैसे बोला जायेगा ?

1. स्नेहवान—निद्रालु—स्पर्शन इन्द्रिय के वशीभूत—क्रोधी-स्त्री कथालापी
2. स्नेहवान—निद्रालु— रसना इन्द्रिय के वशीभूत—क्रोधी-स्त्री कथालापी
3. स्नेहवान—निद्रालु— घ्राण इन्द्रिय के वशीभूत—क्रोधी-स्त्री कथालापी

णिक्खित्तु विदियमेत्तं, पढमं तस्सुवरि विदियमेक्केक्कं।
पिंडं पडि णिक्खेओ, एवं सव्वत्थ कायव्वो ॥38 ॥

अर्थ - दूसरे प्रमाद का जितना प्रमाण है उतनी जगह पर प्रथम प्रमाद के पिण्ड को रखकर, उसके ऊपर एक-एक पिण्ड के प्रति आगे के प्रमाद में से एक-एक का निक्षेपण करना और आगे भी सर्वत्र इसी प्रकार करना ॥38 ॥

द्वितीय प्रस्तार

Step 1: द्वितीय प्रमादपिण्ड के प्रमाण बार प्रथम प्रमाद पिण्ड को रखो ।

विकथा (4)	4	4	4	4

Step 2: एक-एक पिण्ड के ऊपर द्वितीय प्रमाद पिण्ड के एक-एक भेद को रखो ।

कषाय	1 (क्रो)	1 (मा)	1 (मा)	1 (लो)
विकथा	4	4	4	4

इनका जोड़ = 16

* यह जो 16 आया, इसे प्रथम प्रमाद पिण्ड समझना और इन्द्रिय को द्वितीय प्रमाद पिण्ड समझना ।

Step 3: पुन: द्वितीय प्रमादपिण्ड प्रमाण बार प्रथम प्रमादपिण्ड रखो ।

विकथा-कषाय	16	16	16	16	16

Step 4: इसके ऊपर द्वितीय प्रमादपिण्ड के एक-एक भेद को रखो ।

इन्द्रिय	1 (स्प)	1 (र)	1 (घ्रा)	1 (च)	1 (क)
विकथा-कषाय	16	16	16	16	16

इनका जोड़ = 80

इन 80 भंगों को कैसे बोला जायेगा ?

1. स्त्रीकथालापी—क्रोधी—स्पर्शन इन्द्रिय वशीभूत-निद्रालु-स्नेहवान ।
2. भक्तकथालापी—क्रोधी—स्पर्शन इन्द्रिय वशीभूत-निद्रालु-स्नेहवान ।
3. राजकथालापी—क्रोधी—स्पर्शन इन्द्रिय वशीभूत-निद्रालु-स्नेहवान ।

तदियक्खो अंतगदो, आदिगदे संकमेदि विदियक्खो।
दोण्णि वि गंतूणंतं, आदिगदे संकमेदि पढमक्खो ॥39 ॥

अर्थ - प्रमाद का तृतीय स्थान अन्त को प्राप्त होकर जब फिर से आदिस्थान को प्राप्त हो जाय तब प्रमाद का दूसरा स्थान भी बदल जाता है। इसी प्रकार जब दूसरा स्थान भी अन्त को प्राप्त होकर फिर आदि को प्राप्त हो जाय तब प्रथम प्रमाद का स्थान बदलता है। निद्रा और स्नेह इनका दूसरा भेद नहीं है, इसलिये इनमें अक्षसंचार नहीं होता ॥39 ॥

अक्ष परिवर्तन—प्रथम प्रस्तार की अपेक्षा

Step 1: अंत के अक्ष को प्रथम भेद से लेकर अंतिम भेद तक ले जाना । जैसे

1. स्नेहवान—निद्रालु—स्पर्शन इन्द्रिय के वशीभूत—क्रोधी-स्त्री कथालापी
2. स्नेहवान—निद्रालु— रसना इन्द्रिय के वशीभूत—क्रोधी-स्त्री कथालापी
3. स्नेहवान—निद्रालु—घ्राण इन्द्रिय के वशीभूत—क्रोधी-स्त्री कथालापी
4. स्नेहवान—निद्रालु— चक्षु इन्द्रिय के वशीभूत—क्रोधी-स्त्री कथालापी
5. स्नेहवान—निद्रालु— कर्ण इन्द्रिय के वशीभूत—क्रोधी-स्त्री कथालापी

Step 2: जब अक्ष अंतिम स्थान को प्राप्त हो जाए तब—

a) इस अक्ष को पुनः प्रथम स्थान से प्रारंभ करो । तथा

b) पूर्व अक्ष को अगले स्थान पर ले जाओ । जैसे —

5. स्नेहवान—निद्रालु— कर्ण इन्द्रिय के वशीभूत—क्रोधी-स्त्री कथालापी

6. स्नेहवान—निद्रालु—स्पर्शन इन्द्रिय के वशीभूत—मानी-स्त्री कथालापी

7. स्नेहवान—निद्रालु— रसना इन्द्रिय के वशीभूत—मानी-स्त्री कथालापी

8. स्नेहवान—निद्रालु—घ्राण इन्द्रिय के वशीभूत—मानी-स्त्री कथालापी

9. स्नेहवान—निद्रालु— चक्षु इन्द्रिय के वशीभूत—मानी-स्त्री कथालापी

Step 3: ऐसा करते हुए जब तृतीय व द्वितीय अक्ष अंत स्थान पर पहुंच जाए तब

a) द्वितीय व तृतीय अक्ष के प्रथम स्थान को स्थापित करो ।

b) प्रथम अक्ष को अगले स्थान पर ले जाओ । जैसे —

20. स्नेहवान—निद्रालु— कर्ण इन्द्रिय के वशीभूत—लोभी-स्त्री कथालापी

21. स्नेहवान—निद्रालु—स्पर्शन इन्द्रिय के वशीभूत—क्रोधी-भक्त कथालापी

22. स्नेहवान—निद्रालु— रसना इन्द्रिय के वशीभूत—क्रोधी-भक्त कथालापी

Step 4: ऐसा सभी अक्ष स्थानों के अंतिम भेद प्राप्त होने तक करो ।

पढमक्खो अन्तगदो, आदिगदे संकमेदि विदियक्खो।
दोण्णि वि गंतूणंतं, आदिगदे संकमेदि तदियक्खो ॥40 ॥

प्रथमाक्ष जो विकथारूप प्रमाद स्थान वह घूमता हुआ जब क्रम से अंत तक पहुंचकर फिर स्त्रीकथारूप आदि स्थान पर आता है तब दूसरा कषाय का स्थान क्रोध को छोड़कर, मान पर आता है |

इसी प्रकार जब दूसरा कषाय स्थान भी अंत को प्राप्त होकर फिर आदि(क्रोध) स्थान पर आता है तब तीसरा इन्द्रिय स्थान बदलता है अर्थात स्पर्शन को छोड़कर रसना पर आता है |

3. अक्ष परिवर्तन—द्वितीय प्रस्तार

Step 1: प्रथम अक्ष के प्रथम भेद से लेकर अंत के भेद तक जाओ । यथा—

1. स्त्रीकथालापी—क्रोधी—स्पर्शन इन्द्रिय वशीभूत-निद्रालु-स्नेहवान ।
2. भक्तकथालापी—क्रोधी—स्पर्शन इन्द्रिय वशीभूत-निद्रालु-स्नेहवान ।
3. राजकथालापी—क्रोधी—स्पर्शन इन्द्रिय वशीभूत-निद्रालु-स्नेहवान ।
4. अवनिपाल-कथालापी—क्रोधी—स्पर्शन इन्द्रिय वशीभूत-निद्रालु-स्नेहवान ।

Step 2: जब प्रथम अक्ष अन्त स्थान को प्राप्त हो गया, तब

a) प्रथम अक्ष को पुन: प्रथम भेद पर ले जाओ, तथा

b) द्वितीय अक्ष को अगले भेद पर ले जाओ । यथा—

4. अवनिपाल-कथालापी—क्रोधी—स्पर्शन इन्द्रिय वशीभूत-निद्रालु-स्नेहवान ।

5. स्त्रीकथालापी—मानी—स्पर्शन इन्द्रिय वशीभूत-निद्रालु-स्नेहवान ।

6. भक्तकथालापी—मानी—स्पर्शन इन्द्रिय वशीभूत-निद्रालु-स्नेहवान ।

7. राजकथालापी—मानी—स्पर्शन इन्द्रिय वशीभूत-निद्रालु-स्नेहवान ।

8. अवनिपाल-कथालापी—मानी—स्पर्शन इन्द्रिय वशीभूत-निद्रालु-स्नेहवान ।

9. स्त्रीकथालापी—मायावी—स्पर्शन इन्द्रिय वशीभूत-निद्रालु-स्नेहवान ।

Step 3: ऐसा करते हुए जब प्रथम एवं द्वितीय अक्ष अंत स्थान को प्राप्त हो जाए, तब—

a) प्रथम व द्वितीय अक्ष को प्रथम भेद पर ले जाओ, तथा

b) तृतीय अक्ष को अगले भेद पर ले जाओ ।

16. अवनिपाल-कथालापी—लोभी—स्पर्शन इन्द्रिय वशीभूत-निद्रालु-स्नेहवान ।

17. स्त्रीकथालापी—क्रोधी—रसना इन्द्रिय वशीभूत-निद्रालु-स्नेहवान ।

18. भक्तकथालापी—क्रोधी—रसना इन्द्रिय वशीभूत-निद्रालु-स्नेहवान ।

Step 4: ऐसा तब तक करते रहना, जब तक कि सारे अक्षों के अन्त स्थान प्राप्त न हो जावें । यथा –

77. स्त्रीकथालापी—लोभी—कर्ण इन्द्रिय वशीभूत-निद्रालु-स्नेहवान ।

78. भक्तकथालापी—लोभी—कर्ण इन्द्रिय वशीभूत-निद्रालु-स्नेहवान ।

79. राजकथालापी—लोभी—कर्ण इन्द्रिय वशीभूत-निद्रालु-स्नेहवान ।

80. अवनिपाल-कथालापी—लोभी—कर्ण इन्द्रिय वशीभूत-निद्रालु-स्नेहवान ।

सगमाणेहिं विभत्ते सेसं लक्खित्तु जाण अक्खपदं।
लद्धे रूवं पक्खिव सुद्धे अंते ण रूवपक्खेवो ॥41 ॥

- अर्थ - किसी ने जितनेवा प्रमाद का भंग पूछा हो उतनी संख्या को रखकर उसमें क्रम से प्रमाद-प्रमाण का भाग देना चाहिये।
- भाग देने पर जो शेष रहे, उसको अक्षस्थान समझ जो लब्ध आवे उसमें एक मिलाकर, दूसरे प्रमाद के प्रमाण का भाग देना चाहिये और भाग देने से जो शेष रहे, उसको अक्षस्थान समझना चाहिये।
- किन्तु शेष स्थान में यदि शून्य हो तो अन्त का अक्षस्थान समझना चाहिये और उसमें एक नहीं मिलाना चाहिये ॥41 ॥

नष्ट

आलाप संख्या बताकर

आलाप का नाम बताना

नष्ट कहलाता है ।

जैसे—5वें तीर्थंकर, तो उत्तर आया—सुमतिनाथ ।

ऐसे ही 10वां प्रमाद का भंग, तो उत्तर ?

नष्ट विधि – प्रथम प्रस्तार अपेक्षा

Step 1: जितनेवा प्रमाद का भंग है उसे अंतिम प्रमाद पिण्ड के प्रमाण से भाग दो ।

जैसे—15 वां प्रमाद भंग कौन-सा है ?

यहाँ 15 को प्रमाद पिण्ड इन्द्रिय का भाग दिया

	लब्ध (quotient)	शेष (remainder)
$\frac{15}{5}$	3	0

Step 2: प्राप्त लब्ध को अगले प्रमाद पिण्ड का भाग दो । (याने कषाय का)

	लब्ध (quotient)	शेष (remainder)
$\frac{3}{4}$	0	3

नोट: यदि शेष 0 नहीं है, तो लब्ध में एक मिलाना ।

Step 3: प्राप्त लब्ध को अगले प्रमाद पिण्ड का भाग दो (याने विकथा का)

	लब्ध (quotient)	शेष (remainder)
$\frac{0+1}{4} = \frac{1}{4}$	0	1

Step 4: जो-जो शेष में संख्या है, वह-वह उस प्रमाद पिण्ड का भेद ग्रहण करना । यदि शेष 0 है, तो अंतिम भेद ग्रहण करना ।

	लब्ध (quotient)	शेष (remainder)
$\frac{15}{5}$	3	0 = कर्ण इन्द्रिय
$\frac{3}{4}$	0	3 = तीसरी कषाय = माया
$\frac{0+1}{4} = \frac{1}{4}$	0	1 = प्रथम विकथा = स्त्री कथा
पूरा भंग हुआ स्नेहवान—निद्रालु—कर्णेन्द्रिय वशीभूत—मायावी—स्त्रीकथालापी		

इसी को द्वितीय प्रस्तार से भी निकालना । परन्तु भाग लगाने का क्रम विपरीत करना ।

नष्ट विधि – द्वितीय प्रस्तार अपेक्षा

Step 1: जितनेवा प्रमाद का भंग है उसे प्रथम प्रमाद पिण्ड के प्रमाण से भाग दो ।

जैसे—15 वां प्रमाद भंग कौन-सा है ?

यहाँ 15 को प्रमाद पिण्ड विकथा का भाग दिया

	लब्ध (quotient)	शेष (remainder)
$\frac{15}{4}$	3	3

<u>नोट</u>: यदि शेष 0 नहीं है, तो लब्ध में एक मिलाना ।

Step 2: प्राप्त लब्ध को अगले प्रमाद पिण्ड का भाग दो । (याने कषाय का)

	लब्ध (quotient)	शेष (remainder)
$\frac{3+1}{4} = \frac{4}{4}$	1	0

Step 3: प्राप्त लब्ध को अगले प्रमाद पिण्ड का भाग दो (याने इन्द्रिय का)

	लब्ध (quotient)	शेष (remainder)
$\frac{1}{5}$	0	1

Step 4: जो-जो शेष में संख्या है, वह-वह उस प्रमाद पिण्ड का भेद ग्रहण करना ।

यदि शेष 0 है, तो अंतिम भेद ग्रहण करना ।

	लब्ध (quotient)	शेष (remainder)
$\frac{15}{4}$	3	3 = तीसरी विकथा = राजकथा
$\frac{3+1}{4} = \frac{4}{4}$	1	0 = अंतिम कषाय = लोभ
$\frac{1}{5}$	0	1 = प्रथम इन्द्रिय = स्पर्शन
पूरा भंग हुआ राजकथालापी-लोभी-स्पर्शनेंद्रिय वशीभूत - निद्रालु- स्नेहवान		

Home-work

इन आलापों को बनाकर लाइये—

25, 40, 65, 78

संठाविदूण रूवं, उवरीदो संगुणित्तु सगमाणे।
अवणिज्ज अणंकिदयं, कुज्जा एमेव सव्वत्थ ॥42 ॥

अर्थ - एक का स्थापन करके

आगे के प्रमाद का जितना प्रमाण है, उसके साथ गुणाकार करना चाहिये।

और उसमें जो अनंकित (शेष रहे प्रमाद) हो, उसको घटाएँ।

इसी प्रकार आगे भी करने से उद्दिष्ट का प्रमाण निकलता है ॥42 ॥

उद्दिष्ट

आलाप रखकर संख्या निकालने को उद्दिष्ट कहते हैं ।

जैसे—धर्मनाथ कौन-से तीर्थंकर हैं ? तो उत्तर दिया— 15वें

अंकित स्थान— अनंकित स्थान

कषाय — क्रोध मान माया लोभ

इनमें से यदि क्रोध का आलाप कहा तो क्रोध अंकित है, शेष 3 स्थान अनंकित हैं ।

यदि मान का आलाप कहा तो मान अंकित हैं, शेष 2 अनंकित है ।

यदि माया का आलाप कहा तो माया अंकित है, शेष 1 अनंकित है ।

यदि लोभ का आलाप कहा तो लोभ अंकित है, 0 अनंकित है।

किस प्रमाद पिण्ड का गुणा पहले करना?

1. जो धीरे-धीरे बदलता है, उसका गुणा पहले करना |
2. अर्थात् प्रथम प्रस्तार में विकथा सबसे धीमे बदलती है, अतः उद्दिष्ट निकालते समय सबसे पहले विकथा का गुणा करना, फिर कषाय का, फिर इन्द्रिय का
3. द्वितीय प्रस्तार में इन्द्रिय सबसे धीमे बदलती है, अतः उद्दिष्ट निकालते समय सबसे पहले इन्द्रिय का गुणा करना, फिर कषाय का, फिर विकथा का

प्रथम प्रस्तार: स्नेहवान-निद्रालु-श्रोत्रइन्द्रिय वशीभूत-मायावी-भक्तकथालापी का कौन-सा भंग है ?

1. एक का स्थापन करो	1
2. प्रथम प्रमाद पिण्ड का गुणा करो	1 × 4 = 4
3. विकथा के अनंकित स्थान घटाओ ।	4 – 2 = 2
4. अगले प्रमाद पिण्ड का गुणा करो ।	2 × 4 = 8
5. कषाय के अनंकित स्थान घटाओ ।	8 – 1 = 7
6. अगले प्रमाद पिण्ड का गुणा करो ।	7 × 5 = 35
7. इन्द्रिय के अनंकित स्थान घटाओ ।	35 – 0 = 35

अर्थात् यह 35 वां भंग हैं ।

द्वितीय प्रस्तार:

भक्तकथालापी-मायावी-श्रोत्रइन्द्रिय वशीभूत-निद्रालु-स्नेहवान का कौन-सा भंग है ?

1.	1 का स्थापन करो ।	1
2.	अंतिम प्रमाद पिण्ड का गुणा करो ।	1 × 5 = 5
3.	इन्द्रिय के अनंकित स्थान घटाओ ।	5 – 0 = 5
4.	द्वितीय प्रमाद पिण्ड का गुणा करो ।	5 × 4 = 20
5.	कषाय के अनंकित स्थान घटाओ ।	20 – 1 = 19
6.	प्रथम प्रमाद पिण्ड का गुणा करो ।	19 × 4 = 76
7.	विकथा के अनंकित स्थान घटाओ ।	76 – 2 = 74
8.	अर्थात् यह 74 वां भंग है ।	

Home Work

इन भंगों की संख्या बताइए —

1. भक्त कथालापी- लोभी – रसना इन्द्रिय के वशीभूत – निद्रालु – स्नेहवान
2. अवनिपाल कथालापी – मायावी – चक्षु इन्द्रिय के वशीभूत – निद्रालु – स्नेहवान
3. राष्ट्र कथालापी – मानी – कर्ण इन्द्रिय के वशीभूत – निद्रालु – स्नेहवान
4. स्त्री कथालापी – क्रोधी – स्पर्शन इन्द्रिय के वशीभूत – निद्रालु – स्नेहवान

इगिवितिचपणखपणदशपण्णरसं खवीसतालसट्ठी य।
संठविय पमदठाणे, णट्ठुद्दिट्ठं च जाण तिट्ठाणे ॥43 ॥

अर्थ - तीन प्रमादस्थानों में क्रम से प्रथम पाँच इन्द्रियों के स्थान पर एक, दो, तीन, चार, पाँच को क्रम से स्थापन करना। चार कषायों के स्थान पर शून्य पांच, दश, पन्द्रह स्थापन करना। तथा विकथाओं के स्थान पर क्रम से शून्य बीस, चालीस, साठ, स्थापन करना।

ऐसा करने से नष्ट उद्दिष्ट अच्छी तरह समझ में आ सकते हैं। क्योंकि जो भंग विवक्षित हो उसके स्थानों पर रखी हुई संख्या को परस्पर जोड़ने से, यह कितनेवां भंग है अथवा इस संख्या वाले भंग में कौन कौन-सा प्रमाद आता है, यह समझ में आ सकता है ॥43 ॥

प्रथम प्रस्तार का गूढ़ यंत्र

स्पर्शन 1	रसना 2	घ्राण 3	चक्षु 4	कर्ण 5
क्रोध 0	मान 5	माया 10	लोभ 15	
स्त्री 0	भक्त 20	राष्ट्र 40	अवनिपाल 60	

इगिवितिचखचडवारम् खसोलरागट्ठदालचउसट्ठिं।
संठविय पमदठाणे, णट्ठुद्दिट्ठं च जाण तिट्ठाणे ॥44 ॥

अर्थ - दूसरे प्रस्तार की अपेक्षा तीनों प्रमादस्थानों में क्रम से प्रथम विकथाओं के स्थान पर 1।2।3।4 स्थापन करना और कषायों के स्थान पर 0।4।8।12 स्थापन करना और इन्द्रियों की जगह पर 0।16।32।48।64 स्थापन करना ऐसा करने से दूसरे प्रस्तार की अपेक्षा भी पूर्व की तरह नष्टोद्दिष्ट समझ में आ सकते हैं ॥44 ॥

दूसरे प्रस्तार का गूढ़ यंत्र

स्त्री 1	भक्त 2	राष्ट्र 3	अवनिपाल 4	
क्रोध 0	मान 4	माया 8	लोभ 12	
स्पर्शन 0	रसना 16	घ्राण 32	चक्षु 48	कर्ण 64

इन यंत्रों का प्रयोग करने की विधि

नष्ट निकालने के लिये (संख्या से भंग)	उद्दिष्ट निकालने के लिये (भंग से संख्या)
जिन कोठों का जोड़ मिलाने से वह संख्या मिले उन कोठों के प्रमादों का भंग होगा ।	जिन कोठों में प्रमाद के उत्तर भेद हों उन कोठों के अंकों को जोड़ने पर संख्या मिलेगी ।